शिखर तक!

विश्व के सर्वोच्च पर्वत की चढ़ाई

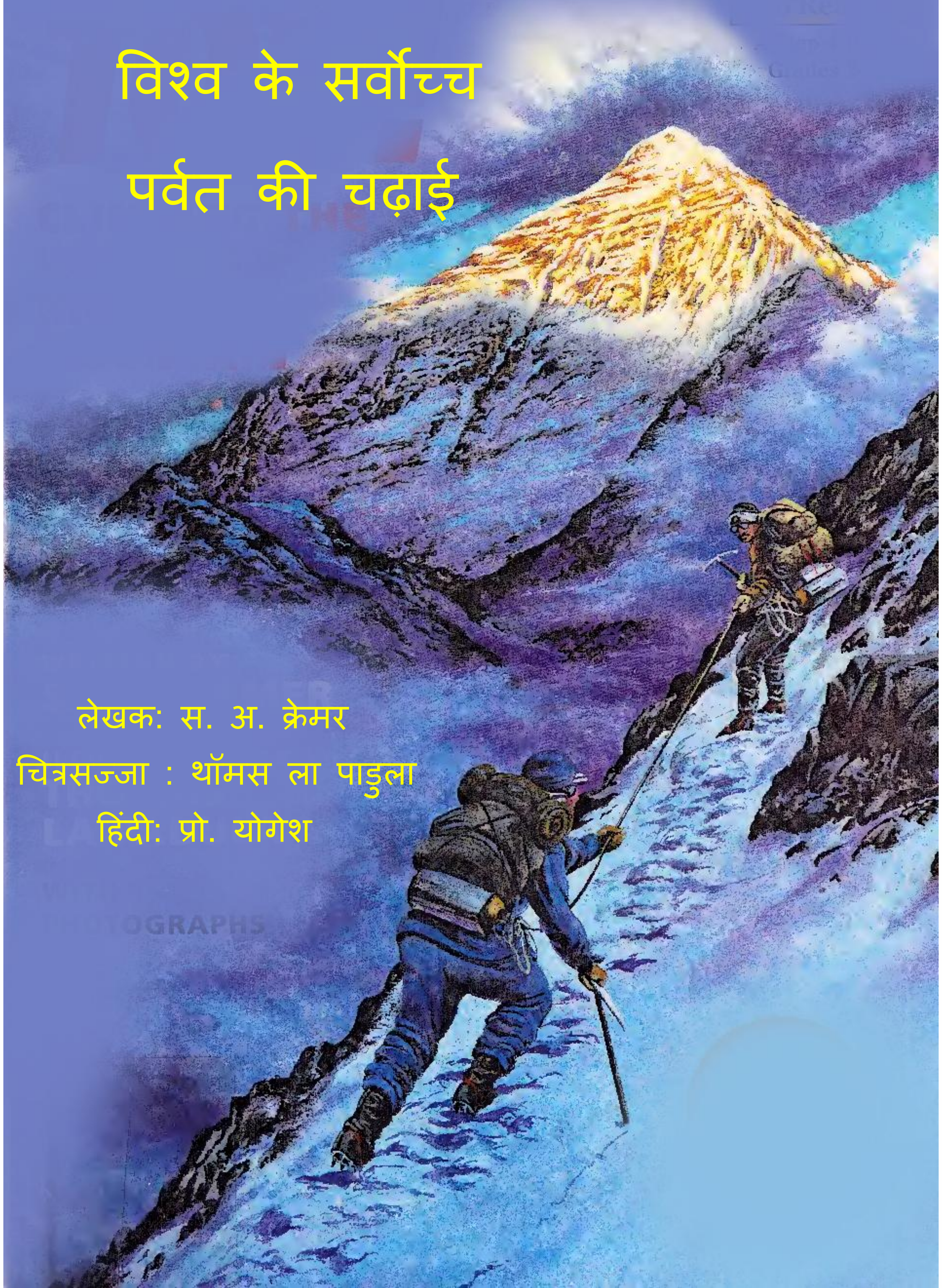

लेखक: स. अ. क्रेमर
चित्रसज्जा : थॉमस ला पाडुला
हिंदी: प्रो. योगेश

शिखर तक!

विश्व के सर्वोच्च पर्वत की चढ़ाई

लेखक: स. अ. क्रेमर

चित्रसज्जा : थॉमस ला पाडुला, हिंदी: प्रो. योगेश

आदमी और पर्वत

दो व्यक्ति एक विशालकाय पर्वत की तलहटी में खड़े हैं। हिमपात हो रहा है, और तेज़ गुस्सैल हवाएं चारों ओर चल रही हैं। वे जिधर भी देखते हैं, उन्हें बर्फ और चट्टानें ही दिखाई देती हैं। यह ऐसी जगह है, जहाँ न कुछ उगता है, और न कोई रहता है।

लेकिन इस भयावने एकांत की ओर दोनों का ध्यान बिलकुल नहीं है। और न ही वे ठिठुराने वाली ठण्ड और तूफानी हवाओं को कोई तवज्जो दे रहे हैं। उनकी दृष्टि उस पर्वत पर केंद्रित है, जो इतना ऊंचा है कि वे शिखर को देख भी नहीं पा रहे हैं।

यह पर्वत है एवरेस्ट, जो संसार का सबसे ऊंचा पर्वत है। २९०२८ फ़ीट की ऊँचाई, यानि यह लगभग ९ किलोमीटर ऊंचा है, यानि बादलों से भी अधिक ऊंचा।

और यह पर्वत मात्र ऊंचा नहीं है - यह पृथ्वी के सर्वाधिक ठन्डे स्थानों में से एक है। वर्ष का कोई भी समय हो, यहाँ पर जमी बर्फ कभी पिघलती ही नहीं। यह एशिया की एक अति-विशाल पर्वत-माला का हिस्सा है, जिसे हिमालय कहते हैं। हिमालय का अर्थ है बर्फ का घर।

एवेरेस्ट के नीचे खड़े ये दोनों व्यक्ति पर्वतारोही हैं। उनके नाम हैं, एडमंड हिलैरी और तेनज़िंग नोर्गे। वर्ष है १९५३, और वे एवेरेस्ट की चोटी तक पहुंचने वाले पहले इंसान बनना चाहते हैं।

तब तक माउंट एवरेस्ट के शिखर तक पहुँचने में कोई भी सफल नहीं हो सका था। इससे पहले दस बार प्रयत्न किया था, भिन्न भिन्न लोगों ने, लेकिन असफलता ही हाथ लगी। उन्नीस पर्वतारोही जान से हाथ धो चुके थे, अब तक। इनमें से दो तो शिखर के करीब पहुँच कर अचानक गायब हो गए, और फिर उनका कोई अता-पता न मिल सका।

तेनज़िंग और हिलैरी एक विशेष अभियान का हिस्सा हैं, जो चोटी तक पहुँचने का प्रयत्न करेगा। यदि वे सफल हुए तो वे पूरे संसार के महानायक बन जायेंगे। विश्व भर में लाखों लोग उनकी सफलता के समाचार की प्रतीक्षा कर रहे हैं। क्या वे अंततः एवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर पाएंगे?

अनेक लोगों का मत है कि चोटी तक पहुँचना असंभव है। पर्वत के कुछ हिस्सों की चढ़ाई इतनी खड़ी और खतरनाक है कि एक छोटी सी असावधानी भी मौत का कारण बन सकती है। पर्वतारोही या तो लुढ़कता हुआ हज़ारों फ़ीट गहरी खाई में गिर सकता है, या फिर हवा में ही तीन किलोमीटर नीचे गिर कर धराशायी हो सकता है।

एवरेस्ट अत्यधिक ठंडा स्थान है। यहाँ गर्मी के मौसम में भी तापमान शून्य से ४० डिग्री नीचे तक गिर सकता है। खास कपड़ों के बग़ैर इंसान कुछ मिनटों में ही ठण्ड से जम कर मृत्यु को प्राप्त हो सकता है।

यहाँ हवाएं बहुत तीव्र गति से चलती हैं, जैसी समुद्री चक्रवात तूफ़ान में। सौ मील प्रति घंटा की रफ़्तार से चलने वाली हवाएं किसी हथौड़े की तरह वार करती हैं। ऐसे में पर्वतारोही के पैर उखड़ते देर नहीं लगती।

भयानक हिम-स्खलन, यानि पहाड़ी ढलान से गिरती बर्फ और चट्टानें, एवेरेस्ट के ढलानों पर दिन में कई-कई बार होते हैं। इससे पहले कि पर्वतारोही कुछ समझ पाएं, वे इसके नीचे दफ़न हो जाते हैं। १९२२ में एक ही हिम-स्खलन ने सात पर्वतारोहियों की जान ले ली थी।

लेकिन एवरेस्ट को फतह न कर पाने का मुख्य कारण था इसकी अकल्पनीय ऊँचाई। आप जितना ऊपर जाते हैं, हवा में ऑक्सीजन की मात्रा उतनी ही कम होती जाती है। एवेरेस्ट की चोटी पर समुद्र तल के मुकाबले केवल एक तिहाई ऑक्सीजन है। पर्याप्त ऑक्सीजन के अभाव में पर्वतारोही का शरीर जड़ हो जाता है। कोई भी इतनी ऊँचाई पर एक समय सीमा के बाद जीवित नहीं रह सकता।

हिलैरी और तेनज़िंग को मालूम है कि एवेरेस्ट कितना खतरनाक है। लेकिन दोनों के मन में दृढ़ निश्चय है कि वे चोटी तक पहुँच सकते हैं। उनका मानना है कि पृथ्वी पर कोई भी स्थान मानव की पहुँच से बाहर नहीं है। यदि एवरेस्ट जैसा स्थान पृथ्वी पर है, तो उसकी चोटी तक मनुष्य को पहुँचना ही चाहिए।

और अब वह क्षण आ पहुंचा है। पर्वत का शिखर बादलों के पीछे कहीं छिपा है। और उस तक पहुँचने के लिए हिलैरी और तेनज़िंग अपना सब कुछ दांव पर लगाने हो उद्यत हैं।

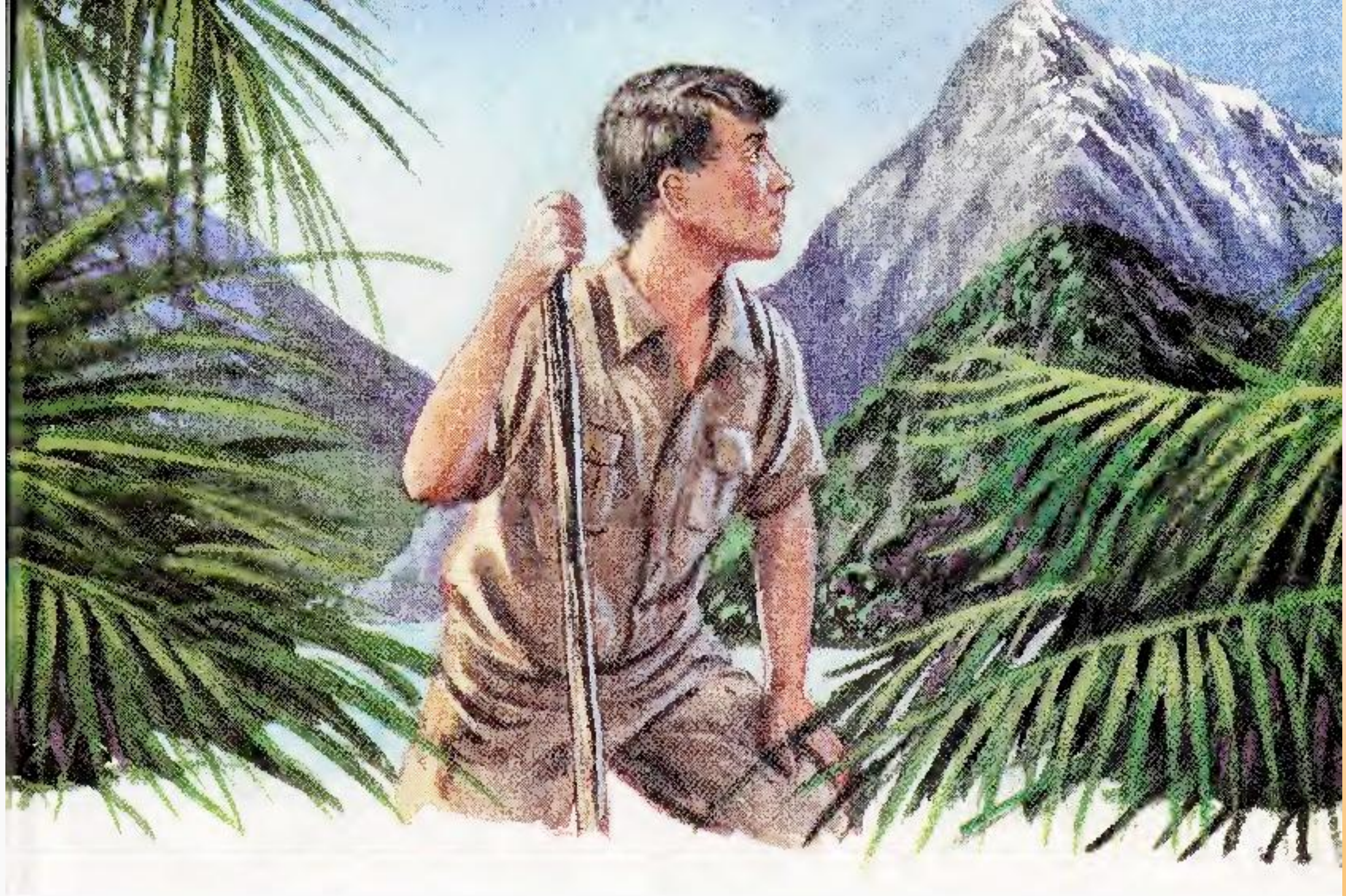

शुरुआत

कुछ महीने पहले तक तेनज़िंग और हिलैरी एक दूसरे को जानते तक नहीं थे। लेकिन फिर भी बहुत सालों से दोनों की आँखों में एक ही सपना था - एवेरेस्ट की चोटी तक सबसे पहले पहुँचने का।

हिलैरी दूर-दराज़ न्यूज़ीलैण्ड का रहने वाला है, और मधु-मक्खियां पालता है। उसके बचपन में सबको लगता था कि यह ज़िन्दगी में ज़्यादा कुछ हासिल नहीं कर पायेगा। वह एक छोटे कद का संकोची बालक था, जिसका स्कूल में प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं था। उसके पिता कभी-कभी उसे मारते भी थे।

लेकिन उम्र बढ़ने पर वह ऊंचे कद का हृष्ट-पुष्ट नौजवान बन गया। उसने पर्वतारोहण को अपना शौक बनाया। सोलह वर्ष की अवस्था तक उसने कभी बर्फ देखी भी नहीं थी, और पहली बार किसी पर्वत की चोटी पर वह २० की उम्र में चढ़ा।

एक दिन तेनज़िंग और हिलैरी को अंग्रेज़ों द्वारा आयोजित एक नए अभियान के बारे में पता चला। इस अभियान में भाग लेने के लिए विश्व के चौदह सर्वोत्तम पर्वतारोहियों का चयन होना था। लेकिन इनमें से सर्वश्रेष्ठ को ही चोटी पर भेजा जायेगा। हर कोई इसका प्रयत्न कर सके, इसके लिए न तो पर्याप्त समय था, और न ही साधन।

इसके विपरीत तेनज़िंग जन्म से ही पहाड़ों से परिचित था। उसका जन्म नेपाल के पहाड़ों में रहने वाले एक शेरपा परिवार में हुआ था। एवरेस्ट क्योंकि नेपाल की सीमा पर ही है, वह उसकी छत्रछाया में ही पला बढ़ा था।

तेनज़िंग का पेशा था पर्वतारोहियों के गाइड का काम करना। लोग उसे बर्फ का तेंदुआ कहते थे। उसने कई बार एवेरेस्ट पर चढ़ने का प्रयत्न किया। उसके परिवार को चिंता थी कि वह तब तक कोशिश करता रहेगा जब तक या तो वह सफल नहीं हो जाता, या इस कोशिश में उसकी मौत नहीं हो जाती।

हिलैरी और तेनज़िंग, दोनों को आमंत्रित किया गया। अभियान शुरू करने के लिए सभी नेपाल की राजधानी काठमांडू में एकत्र हुए।

पर्वत की ओर चलने से पहले उन्होंने रसद व अन्य सामान का प्रबंध किया। इस अभियान में तीन महीने का समय लगना था, इसलिए उन्हें २२००० पौंड वज़न के उपकरण साथ ले जाने थे। यदि कोई भी आवश्यक वास्तु छूट गई, तो अभियान की असफलता निश्चित थी। और एक बार चल पड़ने पर छूटी हुई वस्तुएं मंगा पाना असंभव था।

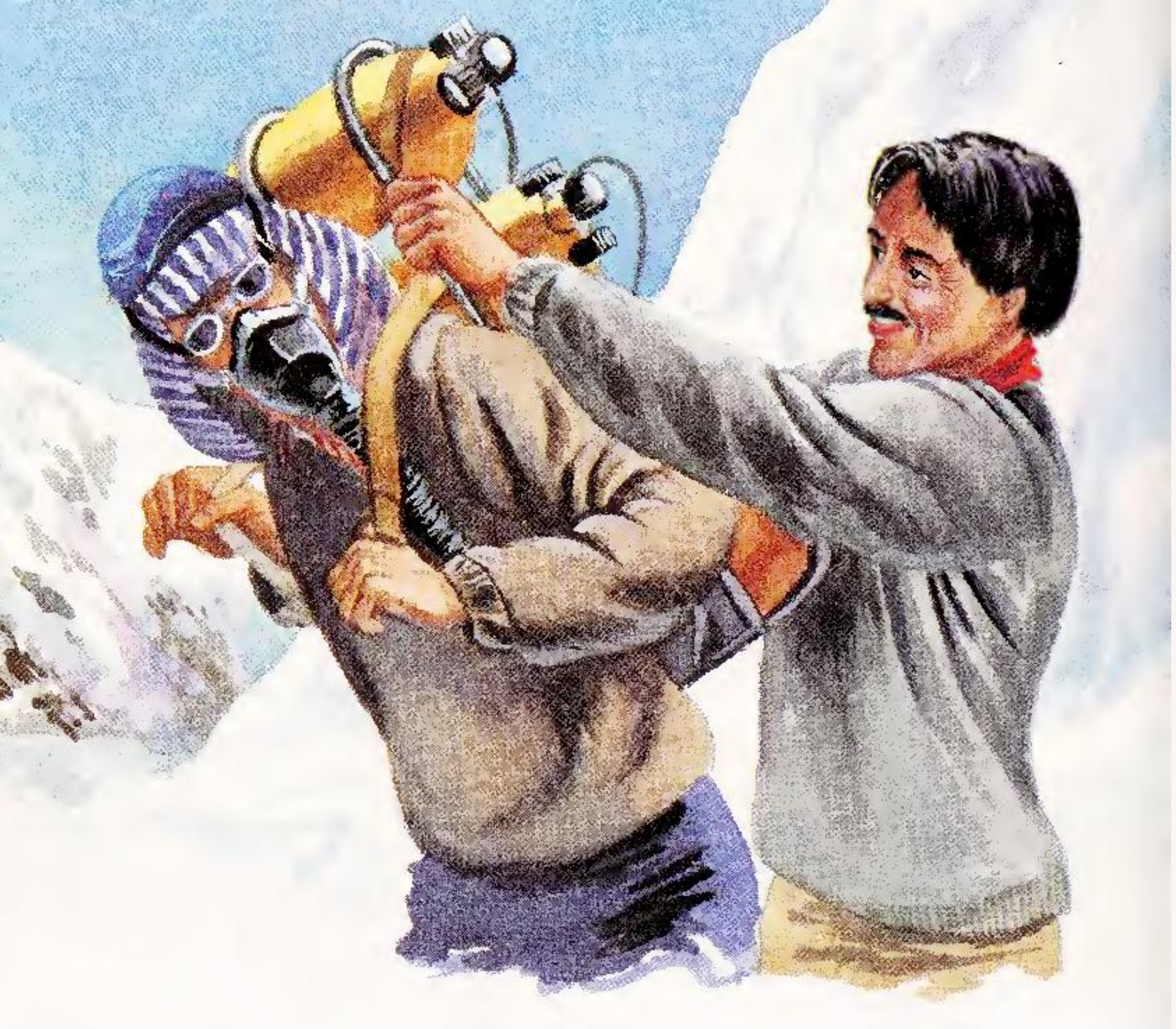

हिलैरी और तेनज़िंग ने सारे सामान का निरीक्षण किया। सब कुछ मौजूद था, उनके पसंदीदा भोजन से लेकर गर्म पारका जैकेट तक। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण थे वे सिलिंडर जो उन्हें अपनी पीठ पर बांधकर ले जाने थे।

इन सिलिंडरों में ऑक्सीजन भरी थी, जिसकी मदद से वे इतनी ऊँचाई पर सांस ले सकें। अपने शरीर को आदी करने के लिए यदि वे कम हवा में अभ्यास कर भी लें, तो भी बहुत कम पर्वतारोही होंगे जो बिना ऑक्सीजन के ऊंचे पर्वतों पर चढ़ सकें। २६००० फुट की ऊँचाई पर "मौत का इलाका" (death zone) शुरू हो जाता है। यहाँ कोई भी अधिक समय तक बिना ऑक्सीजन जीवित नहीं रह सकता।

लेकिन ऑक्सीजन के सिलेंडर भारी होते हैं। उनको ढोने के कारण चढ़ाई का काम और मुश्किल हो जाता है। इस अभियान के लिए बहुत कम वज़न के सिलिंडरों का इंतज़ाम किया गया है। तेनज़िंग और हिलैरी को उम्मीद है कि वे इन्हें सुगमता से ढो सकेंगे।

यह अभियान १० मार्च १९५३ को एवरेस्ट के लिए रवाना होता है। रसद को ढोने के लिए ४५० शेरपाओं का इंतज़ाम किया गया है, जो सारे सामान को जितनी ऊँचाई तक संभव हो, ले जाएंगे। इनमें से अधिकतर शेरपा ६० पौंड तक का वज़न ढो सकते हैं।

एवेरेस्ट तक पहुँचने के लिए अभियान को १९० मील पैदल चलना होगा। पहुँचने का एक मात्र रास्ता इतना संकरा है कि एक से अधिक व्यक्ति साथ नहीं चल सकते। पर्वत की तलहटी तक पहुँचने में ही एक माह से अधिक समय लग जाएगा।

उनका रास्ता एक जंगल के मध्य शुरू होता है। अभी बहुत गर्मी है। जल्द ही सभी पसीने से तर-बतर हो जाते हैं। विश्वास करना कठिन है कि जल्दी ही उन्हें मोटे पार्का जैकट और बर्फ में चलने वाले जूते (snow boots) पहनने पड़ेंगे।

जंगल तो बहुत सुन्दर है, लेकिन तेनज़िंग और हिलैरी बहुत सतर्क और सावधान हैं। निकट ही कहीं चीते, मगरमच्छ या विषैले सर्प हो सकते हैं। जब उन्हें पानी में होकर गुज़ारना पड़ता है तो जोंकें उनका खून पीती हैं। नदियां पार करने के लिए वे रस्सी के बने पुलों पर से गुज़रते हैं, जो हवा के तेज़ झोंकों से ज़ोर-ज़ोर से हिलते रहते हैं।

रास्ता लगातार उन्हें अधिक ऊँचाई पर ले जा रहा है। ऊँचाई के साथ ठण्ड भी बढ़ती जा रही है। दूरी पर बर्फ से ढकी चोटियां दिखाई दे रही हैं। इन्हीं में से एक एवरेस्ट है।

और फिर अंततः वे आ पहुँचते हैं। अत्यधिक ऊंचा एवरेस्ट पर्वत उनके सामने है, कठोर ठंडी बर्फ से लदा हुआ। सूर्य की रोशनी में उसका शिखर दूर से ही दमक रहा है। यह समझना कठिन नहीं है कि शेरपा लोग इसे चोमोलुंगमा, यानि सारे विश्व की देवी-माँ , क्यों कहते हैं। उसे देख कर ऐसा लगता है कि एक समय इसी ने पूरी धरती पर राज्य किया होगा। सभी पर्वतों की सम्राज्ञी, यह बहुत डरावनी लेकिन अति-भव्य है।

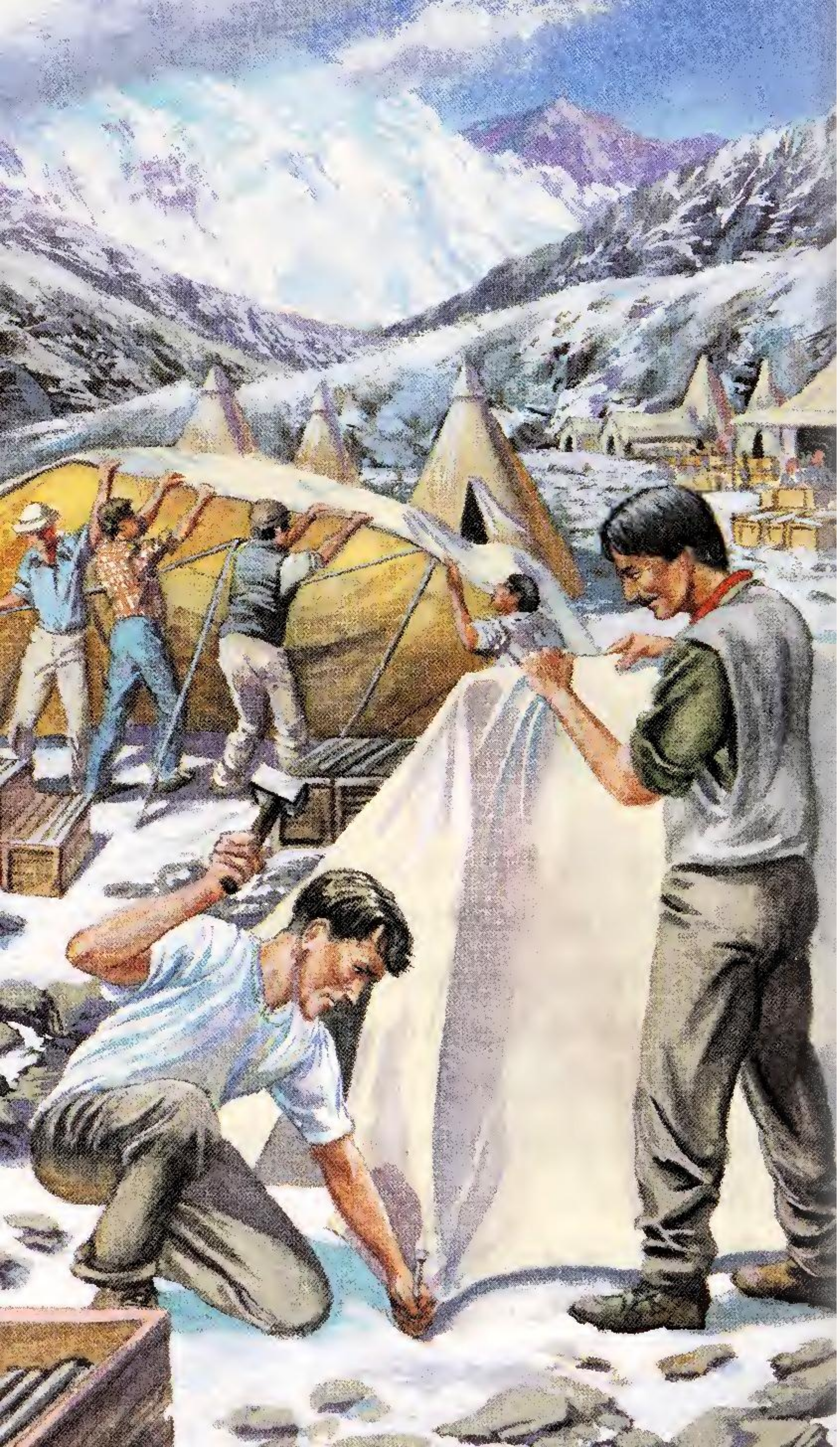

चढ़ाई

सभी लोग व्यस्त हो जाते हैं, अनेक तम्बू तान कर पहला शिविर यानि बेस कैंप तैयार करने में। आगे चल कर वे आठ और कैंप लगाएंगे, हर एक पिछले से अधिक ऊँचाई पर। इन तम्बुओं के अंदर हैं भोजन, उपकरण, और कड़ी सर्दी से थोड़ा बचाव, यानि हर वह चीज़ जिसकी ज़रूरत उन्हें पड़ेगी चढ़ाई जारी रखने के लिए।

यह बेस कैंप हिमालय के एक रहस्यमयी इलाके में है। अनेक शेरपाओं का मानना है कि यहाँ अक्सर एक अजीब प्राणी घूमा करता है। मात्र दो वर्ष पहले यहाँ की बर्फ में चार उँगलियों वाले पैरें के निशानों के फोटो सामने आये थे। ये निशान इंसानी नहीं थे, और न ही किसी अन्य परिचित प्राणी के।

कोई निश्चयपूर्वक नहीं जानता कि ऐसा प्राणी वास्तव में है भी या नहीं। लेकिन शेरपाओं ने उसे एक नाम दे रखा है, यति, यानि बर्फ में रहने वाला मानव। अन्य लोग उसे अबोमिनेबल स्नोमैन (abominable snowman) भी कहते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि यति चलता तो चार पैरों पर है, पर भागता आदमी की तरह दो पैरों पर है। उसके शरीर पर भूरे-लाल रंग के बाल हैं और उसका सर ऊपर से नोकीला है।

आगे है बर्फ का एक बहुत विशाल मैदान, जो असल में एक हिमनद या ग्लेशियर (glacier) है। इसकी ढलान बच्चों के फिसलने वाले झूले जितनी है, लेकिन यह ऊबड़-खाबड़ है, न कि झूले की तरह सपाट। इसमें जगह-जगह विशाल दरारें पड़ी हैं, जिन्हें क्रेविस (crevasses) कहते हैं। इनमे से कुछ सैकड़ों फ़ीट गहरी हैं। एक छोटी सी भूल, और इंसान हमेशा के लिए लुप्त हो सकता है।

वह बोलता नहीं, बल्कि एक हंसने जैसी आवाज़ निकलता है - "कक-कक-कक कईईई ! कक-कक-कक कईईई !"

तेनज़िंग और हिलैरी इस गुत्थी को सुलझाना चाहते हैं। लेकिन उस यति का कैंप के आस-पास कोई अता-पता नहीं है। और उसको खोजने के लिए अभी समय नहीं है। चढ़ाई भी तो शुरू करनी है।

तेनज़िंग और हिलैरी सबसे आगे चलना शुरू करते हैं। अब यहाँ से आगे कोई रास्ता या पगडण्डी नहीं है, उन्हें अपनी राह खुद ही बनानी है।

यहाँ-वहां खड़े बर्फ के खम्भे और टीले राह को और मुश्किल बना देते हैं। ये अचानक ढह कर पर्वतारोही को कुचल सकते हैं।

हिलैरी और तेनज़िंग बहुत सावधानी पूर्वक चढ़ाई कर रहे हैं। वे बर्फ की कुल्हाड़ी (ice axe) नामक उपकरण का इस्तेमाल करके बर्फ में सीढ़ियां बनाते हैं। वे अपने जूतों के नीचे कीलों से युक्त क्रैम्पॉन (crampon) नामक एक उपकरण बांधते हैं ताकि वे ढलान पर फिसल कर लुढ़कते हुए नीचे न पहुँच जाएँ।

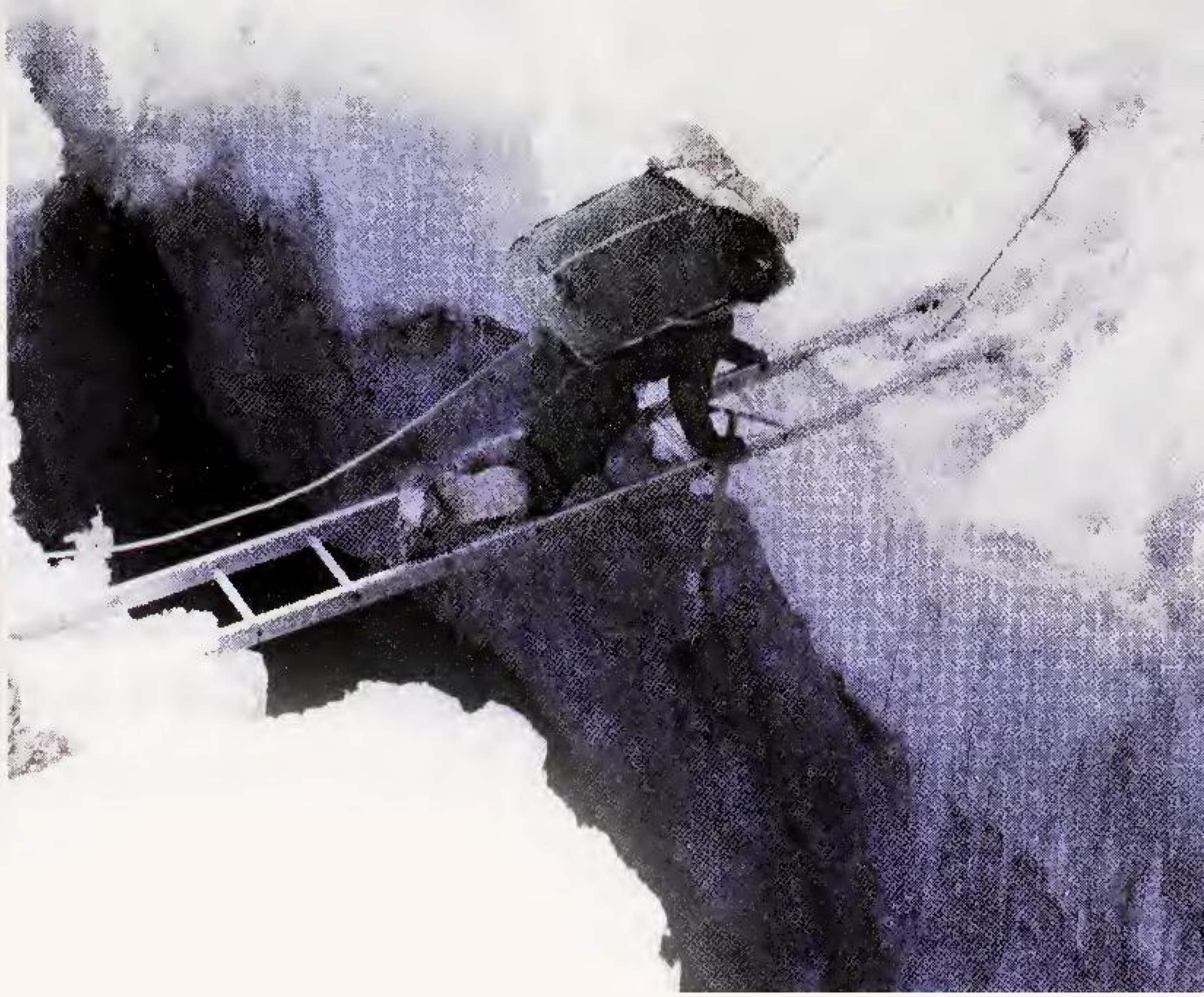

जब वे हिमनद की बहुत चौड़ी दरारों पर पहुँचते हैं, तो वे अपने साथ लाये एक सीढ़ी-नुमा पुल को उस दरार के आर-पार बिछा कर उसे पार करते हैं। हिमनद के रास्ते पर वे रंगीन झंडियां लगाते चलते हैं, और सहारा लेने के लिए रस्सियां बिछाते हैं। इस तरह उनके पीछे आने वाले लोग आसानी से आ सकते हैं, और सुरक्षित महसूस करते हैं।

वे दोनों ग्लेशियर के बीचों-बीच उस भाग से होकर जाते हैं, जिसे आइस-फॉल (ice fall) कहा जाता है। ग्लेशियर के किनारों पर चलना सुरक्षित नहीं होता क्योंकि वहां हिम-स्खलन (avalanche) हो सकता है। जब वे चलते हैं तो बर्फ में से कराहने जैसी आवाज़ें आती हैं। कभी कभी वे महसूस कर सकते हैं कि बर्फ उनके पैरों तले हिल रही है।

थोड़ी सी दूरी तय करने में भी अत्यधिक समय लग जाता है। जैसे आधा मील से भी कम दूरी तय करने में ३-४ दिन का समय। सभी एक समूह बना कर चढ़ते हैं, एक दूसरे से रस्सी से बंधे हुए। ताकि अगर कोई एक गिरे तो बाकी उसे संभाल लें। वे अपने क्रैम्पॉन को बर्फ पर पटकते हुए चलते हैं, और साथ ही सहारे के लिए अपनी बर्फ की कुल्हाड़ी को बर्फ में धँसाते हुए।

लेकिन इस प्रकार चढ़ना कई बार ज़िन्दगी बचाने के बजाय उसे गंवाने का सबब भी बन सकता है। अगर एक व्यक्ति फिसल कर दरार में गिरा तो अपने साथ सभी को खेंच कर ले जा सकता है।

लगातार बदलता मौसम भी खतरे का कारण बन सकता है। ग्लेशियर पर दोपहर के समय अचानक से बर्फ की आंधियाँ आया करती हैं। रात का तापमान शून्य से १४ डिग्री नीचे, और अगली सुबह शून्य से ७० डिग्री ऊपर हो सकता है।

सूरज की धूप भी खतरे का कारण बन सकती है। कभी सूरज बर्फ पर इतनी तेज़ी से चमकता है कि पर्वतारोही के चेहरे की त्वचा को बुरी तरह जला डालता है। सफ़ेद बर्फ पर धूप की तेज़ चमक उसकी आँखों को नुकसान पहुंचा सकती है।

जब ऐसा होता है, तो व्यक्ति हिमांध या स्नो ब्लाइंड (snow blind) हो जाता है। यह अंधापन अस्थायी होता है, लेकिन कई दिन तक रह सकता है। इसलिए हर कोई अपनी आँखों को बचाने के लिए विशेष चश्मे पहनता है।

एक दिन केवल तेनज़िंग और हिलैरी अकेले ग्लेशियर पर जा रहे थे। भीषण हवा चल रही थी और बेहद सर्दी थी।

हिलैरी आगे चल रहा था, और रस्सी से बंधा तेनज़िंग पीछे। वह धीमे-धीमे एक-एक कदम चल रहे थे। अचानक हिलैरी के पैर नीचे कुछ आया, और वह लुढ़कता हुआ एक छिपी हुई गहरी दरार में जा पहुंचा। बर्फ की दीवार पर रपटता हुआ वह धम से दरार की तली में जाकर गिरा।

तेनज़िंग ने तुरंत ज़रूरी कार्रवाई की। उसने अपनी कुल्हाड़ी बर्फ में धंसा दी। फिर उसने रस्सी को कुल्हाड़ी के हत्थे पर लपेट दिया, और अपनी कमर पर भी रस्सी के कई लपेट दे दिये। वह मदद के लिये चिल्लाते हिलैरी की आवाज़ सुन सकता था। धीमे धीमे लेकिन दृढ़ता पूर्वक उसने हिलैरी को दरार से बाहर खेंच निकाला।

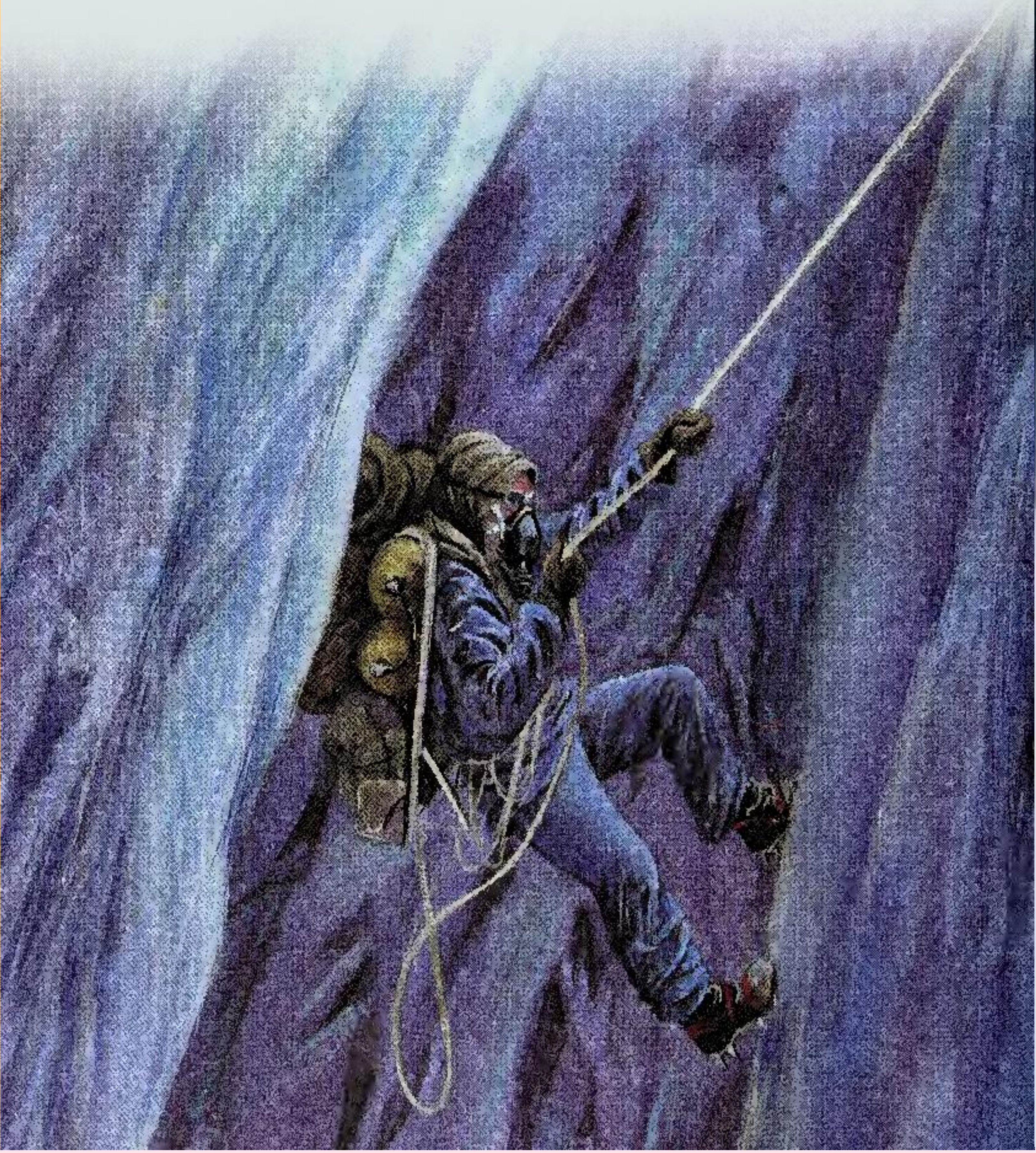

यह बहुत ही नाज़ुक परिस्थिति थी, जिसमें कुछ भी हो सकता था। लेकिन तेनज़िंग ने हिलैरी के प्राण बचा लिए।

अब यह अभियान बर्फ से भरी हुई एक विशाल घाटी में पहुँच गया था। यह घाटी पर्वत से नीचे की ओर किसी विशाल फिसलने वाले झूले की तरह आ रही थी। ऊपर की ओर बड़े-बड़े सीढ़ी-नुमा समतल स्थान भी थे, जैसे किसी विशालकाय दैत्य ने अपने लिए सीढ़ियां बनाई हों।

मौसम बिगड़ता ही जा रहा है। तेज़ हवा, बर्फ़बारी और ओले। अत्यधिक ठण्ड के कारण उनके गले सूख रहे हैं, और उन्हें लगातार प्यास लग रही है।

वे एक समतल स्थान पर पहुँचते है, जो देखने में चन्द्रमा की सतह जैसा अनजाना सा लगता है। नीली बर्फ से ढके पत्थर चारों ओर बिखरे हुए हैं। समुद्र तल से उनकी ऊँचाई साढ़े चार मील से भी अधिक है, लेकिन फिर भी पर्वत का शिखर अभी भी बहुत दूर मालूम होता है, जो हमेशा बर्फीले तूफानों, बादलों या डरावने से कोहरे के पीछे छिपा रहता है।

अभियान के दो अन्य लोगों को शिखर तक जाने के लिए चुना जाता है। पर कुछ घंटे बाद ही वे सुस्त और थके-मांदे वापस लौट आते हैं। वे शिखर तक नहीं पहुँच सके।

अब तेनज़िंग और हिलैरी अगला प्रयास करेंगे। वे दोनों अकेले कुछ दूर तक चढ़ाई करते हैं, और फिर तम्बू लगा कर रात के लिए रुक जाते हैं। अब एवरेस्ट पर विजय का स्वप्न इन दोनों पर निर्भर है।

चोटी तक

२९ मई १९५३ का दिन। २७९०० फ़ीट की ऊँचाई पर सुबह के चार बज रहे हैं। तेनज़िंग और हिलैरी तम्बू में सिकुड़ कर गठरी बने बैठे हैं। आज तक किसी ने इतनी ऊंचाई पर रात नहीं बिताई है।

सूरज उग रहा है। चारों ओर बर्फ उसकी रोशनी में चमक रही है। हवाएं कुछ थम गई हैं। जल्दी ही मौसम साफ़ हो जायेगा।

दोनों ने जल्दी जल्दी अपना नाश्ता खाया। खाने में वे मछली, बिस्कुट, नींबू का रस, चीनी और चाय लेते हैं।

हिलैरी के जूते जम गए हैं, और वह उन्हें ठीक करने के लिए अपने नन्हे से स्टोव पर रखता है। गर्म चमड़े और रबर की गंध तम्बू में भर जाती है, जिसे बर्दाश्त करना कठिन है, और वे दोनों जल्दी से जल्दी चल देना चाहते हैं।

साढ़े छः बजे दोनों चलने के लिए तैयार हैं। जब वे तम्बू से बाहर निकलते हैं तो पर्वतारोही कम और अंतरिक्ष यात्री ज़्यादा नज़र आ रहे हैं। क्योंकि तापमान शून्य से १७ डिग्री नीचे है, वे अपने सबसे गर्म कपड़ों की आठ तहें शरीर पर पहनते हैं। उनकी हथेलियों पर तीन-तीन जोड़ी दस्ताने चढ़े हैं। पैरों को जमने से बचाने के लिए उनहोंने विशेष जूते पहने हैं। दोनों अपनी पीठ पर ४०-४० पौंड उपकरण ढो रहे हैं।

बर्फ की तह मुलायम और फिसलनी है। हर पांच कदम आगे बढ़ने पर वे तीन कदम पीछे सरक जाते हैं। इस प्रकार की बर्फ का मतलब है, हिम स्खलन की सम्भावना। हिलैरी ने तेनज़िंग से पूछा, "क्या हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए?" तेनज़िंग ने उत्तर दिया, "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। " आगे जो भी खतरे हों, अब दोने में से कोई भी वापस नहीं मुड़ना चाहता।

आगे एक संकरा रिज (ridge) है, यानि पर्वत का ऊपरी हिस्सा जहाँ उसके दोनों ओर के ढलान मिलते हैं। इस रिज की चढ़ाई बहुत खड़ी है, और यह पगडंडी जैसा संकरा है। वे जानते हैं, आगे का हर एक कदम उनका आखिर कदम हो सकता है।

हिलैरी ने अपनी कुल्हाड़ी से बर्फ में दोनों के लिए सीढ़ियां बनाईं। लेकिन तेनज़िंग पीछे रह गए थे। कुछ गड़बड़ है। तेनज़िंग की ऑक्सीजन की नली में बर्फ भर गई थी। वह बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रहे थे।

हिलैरी ने नली को पकड़ा। समय बहुत कम था। वह किसी तरह नली को खोलने में कामयाब रहे। तेनज़िंग ने जोर से ऑक्सीजन अपने फेफड़ों में खेंची और बड़ी राहत महसूस की। एक और नाज़ुक परिस्थिति। इस बार हिलैरी ने तेनज़िंग की जान बचाई।

वे अब उस ज़मीन पर चल रहे थे, जिसे कभी किसी इंसान ने देखा तक नहीं था। अचानक एक चिकनी काली चट्टान ने उनका रास्ता रोक दिया। यह चट्टान ४० फुट ऊंची थी, और उसके दोनों ओर से जाने का कोई मार्ग नहीं था। आखिर क्या इस पर्वत ने उन्हें हरा दिया? इस ऊंची दीवारनुमा चट्टान पर वे भला कैसे चढ़ पाएंगे?

लेकिन हिलेरी को एक उपाय सूझा। दीवार में एक संकरी दरार है, जिसमें शायद घुसा जा सकता था। दरार के एक तरफ बर्फ थी। अगर वह टूटी तो हिलैरी वहीं लटका रह जायेगा। और अगर तेनज़िंग उसका भार नहीं संभाल पाया तो दोनों ही एवरेस्ट की खाई में जा गिरेंगे।

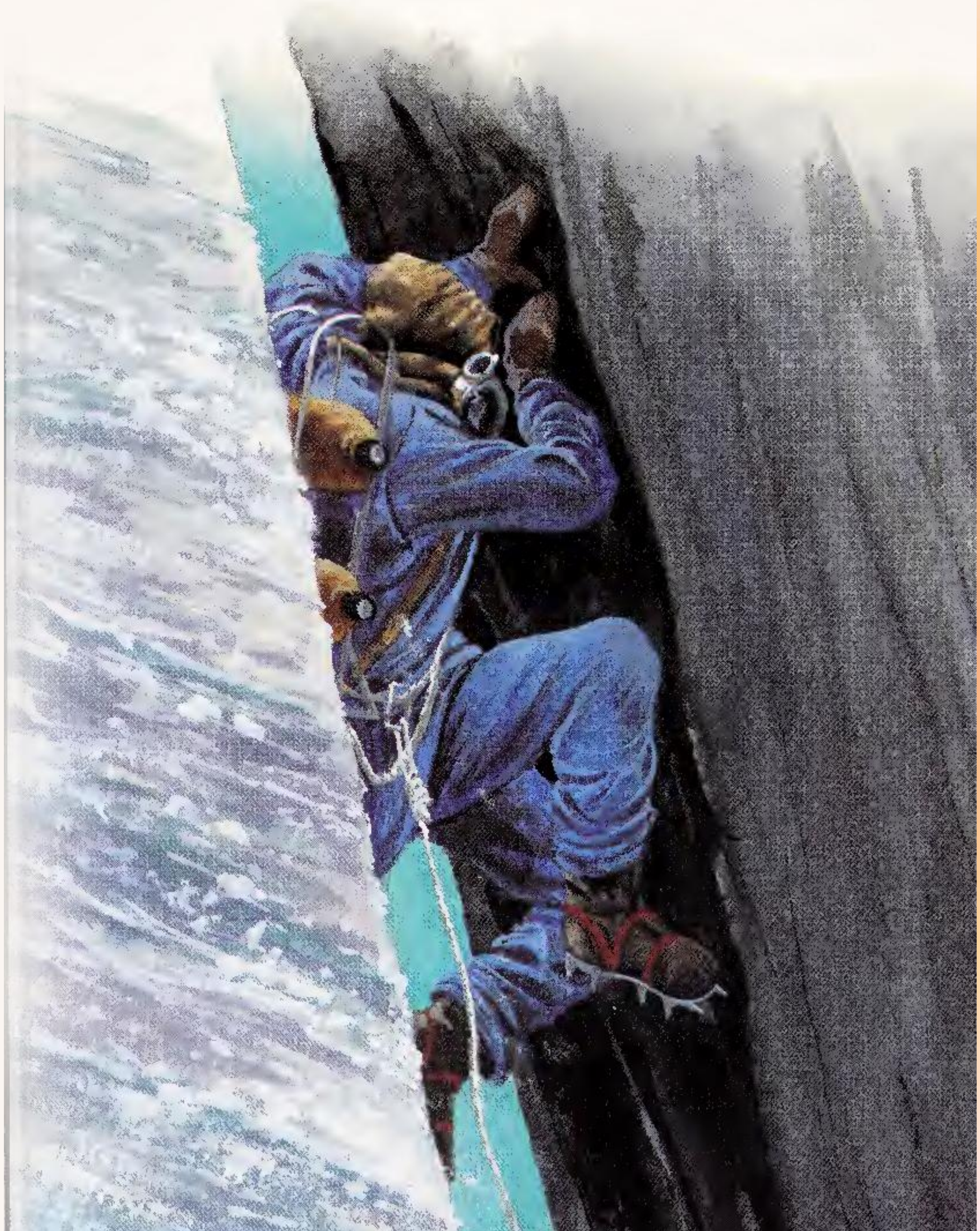

उस दरार में घुस कर उसे पार करने में हिलैरी को आधा घंटा लग जाता है। उसने ऐसी थकान का अनुभव जीवन में कभी नहीं किया था।

लेकिन अंततः वह सुरक्षित है। वह बर्फ पर निढाल हो गिर पड़ा। उसकी सांस इतनी फूल रही है, कि उसने कहा, "मैं एक पानी से निकाली गई मछली की तरह हांफ रहा था। "

डर और आशंका से भरे, वे कदम-कदम आगे बढ़ते हैं। अब चोटी और कितनी दूर है ? उन्हें लग रहा है कि जैसे वे अनंत काल से इस पहाड़ पर चढ़ रहे हों। आगे एक बर्फ का ढेर है। और फिर एक उतराई।

अरे, यह बर्फ का ढेर ही पर्वत का शिखर है! वे पूरी शक्ति लगा कर उसकी ओर बढ़ते हैं। लेकिन अचानक वे ठिठकते हैं। कहीं यह ढेर एक हिम-स्खलन की तरह पर्वत से नीचे को न ढह जाए। क्या यह इतना मज़बूत है कि इस पर खड़ा हुआ जा सके?

लेकिन अब वे रुक नहीं सकते। वे उस ढेर पर चढ़ जाते हैं, और वह मज़बूती से टिका रहता है।

उन्होंने अपना लक्ष्य पा लिया था। संसार की छत पर पहुँचने वाले वे पहले इंसान थे।

तेनज़िंग ने विजय-मुस्कान भरे चमकते चेहरे से हिलैरी की ओर देखा, और फिर दोनों ने हाथ मिलाया। तेनज़िंग इतना खुश है, कि उसने हिलैरी को गले से लगा लिया। और फिर उसने अपनी शेरपा भाषा में कहा, "थुजी चे चोमोलुंगमा", यानि तुम्हारा बहुत आभार, विश्व की देवी माता।

सुबह के ११:३० बज रहे हैं। उन्होंने अपने ऑक्सीजन सिलिंडर उतार कर नीचे डाल दिए। हिलैरी ने एक कैमेरा निकला जिसे उसने अपनी पोशाक के भीतर रखा था ताकि उसके कल पुर्जे ठण्ड से जम न जाएं। उन्हें फोटो लेने थे, यह सिद्ध करने के लिए कि वे चोटी तक पहुँच गए। पहला चित्र खेंचा गया हिलैरी का जिसने अपनी कुल्हाड़ी के हत्थे पर चार झंडे लगा रखे थे। ये झंडे थे संयुक्त राष्ट्र, नेपाल, भारत और ग्रेट ब्रिटेन के।

दोनों ने चोटी से नीचे निगाह डाली और वहां तैरते बादलों को देखा। एवरेस्ट पर्वत की बैंगनी रंग की परछाईं मीलों दूर तक फैली हुई थी, और सूर्य के प्रकाश में नीचे बहती नदियां चांदी सी चमक रही थीं। "हमारे ऊपर कुछ भी नहीं है, और पूरा संसार हमारे नीचे है," हिलैरी ने खुद से कहा।

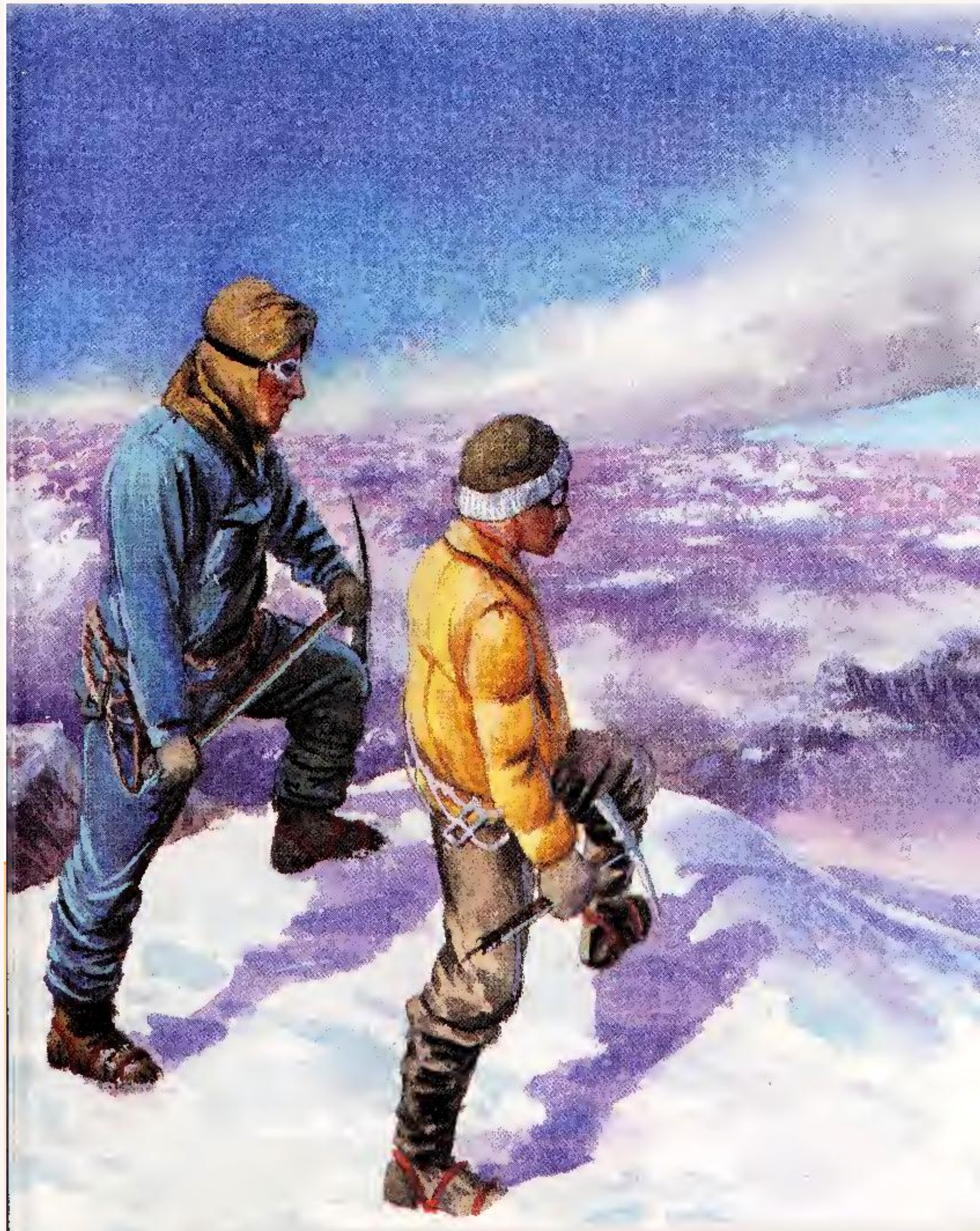

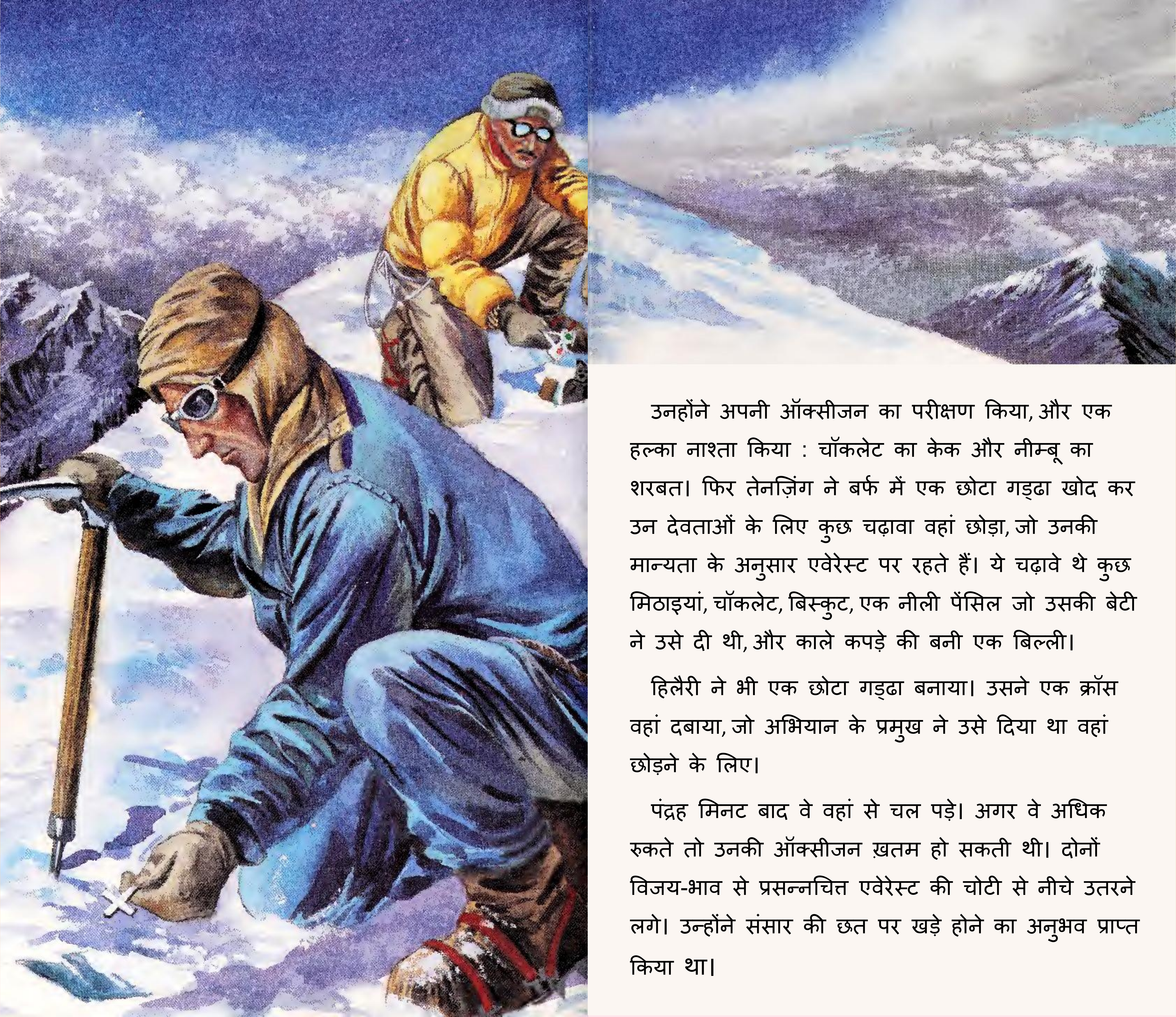

उनहोंने अपनी ऑक्सीजन का परीक्षण किया, और एक हल्का नाश्ता किया : चॉकलेट का केक और नीम्बू का शरबत। फिर तेनज़िंग ने बर्फ में एक छोटा गड्ढा खोद कर उन देवताओं के लिए कुछ चढ़ावा वहां छोड़ा, जो उनकी मान्यता के अनुसार एवेरेस्ट पर रहते हैं। ये चढ़ावे थे कुछ मिठाइयां, चॉकलेट, बिस्कुट, एक नीली पेंसिल जो उसकी बेटी ने उसे दी थी, और काले कपड़े की बनी एक बिल्ली।

हिलैरी ने भी एक छोटा गड्ढा बनाया। उसने एक क्रॉस वहां दबाया, जो अभियान के प्रमुख ने उसे दिया था वहां छोड़ने के लिए।

पंद्रह मिनट बाद वे वहां से चल पड़े। अगर वे अधिक रुकते तो उनकी ऑक्सीजन ख़तम हो सकती थी। दोनों विजय-भाव से प्रसन्नचित्त एवेरेस्ट की चोटी से नीचे उतरने लगे। उन्होंने संसार की छत पर खड़े होने का अनुभव प्राप्त किया था।

बाद में

तेनज़िंग और हिलैरी अब महानायक बन चुके थे। एक प्रकार से अब वे पूरी मानवता का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उन्होंने सिद्ध कर दिया था कि इंसान इस पृथ्वी के सर्वोच्च बिंदु तक पहुँच सकता है। उनके इस अद्भुत करतब का जश्न सारी दुनिया मना रही थी।

ग्रेट ब्रिटेन में लाउड स्पीकरों से इस समाचार की घोषणा की जा रही थी। लोगों का सैलाब पागलों की तरह चिल्ला रहा था, "एवरेस्ट पर विजय पा ली गई है!" उसी दिन इंग्लैंड की नई महारानी की ताजपोशी भी हुई थी। उस नवयुवती महारानी एलिज़ाबेथ ने दोनों पर्वतारोहियों को बधाई का टेलीग्राम भेजा।

काठमांडू में नेपाल नरेश ने दोनों का भव्य स्वागत किया। उनकी ३ मील लम्बी परेड निकली गई, जिसे देखने के लिए सड़क के दोनों ओर हज़ारों की संख्या में लोग खड़े थे। तेनज़िंग को "नेपाल के सितारा" नामक ख़िताब दिया गया। यह उनके देश का सर्वोच्च सम्मान है।

फिर हिलेरी और तेनज़िंग भारत गए, जहाँ तेनज़िंग वर्षों से रह रहे थे। एयरपोर्ट पर २०००० लोगों के विशाल जनसमूह ने उनका स्वागत किया।

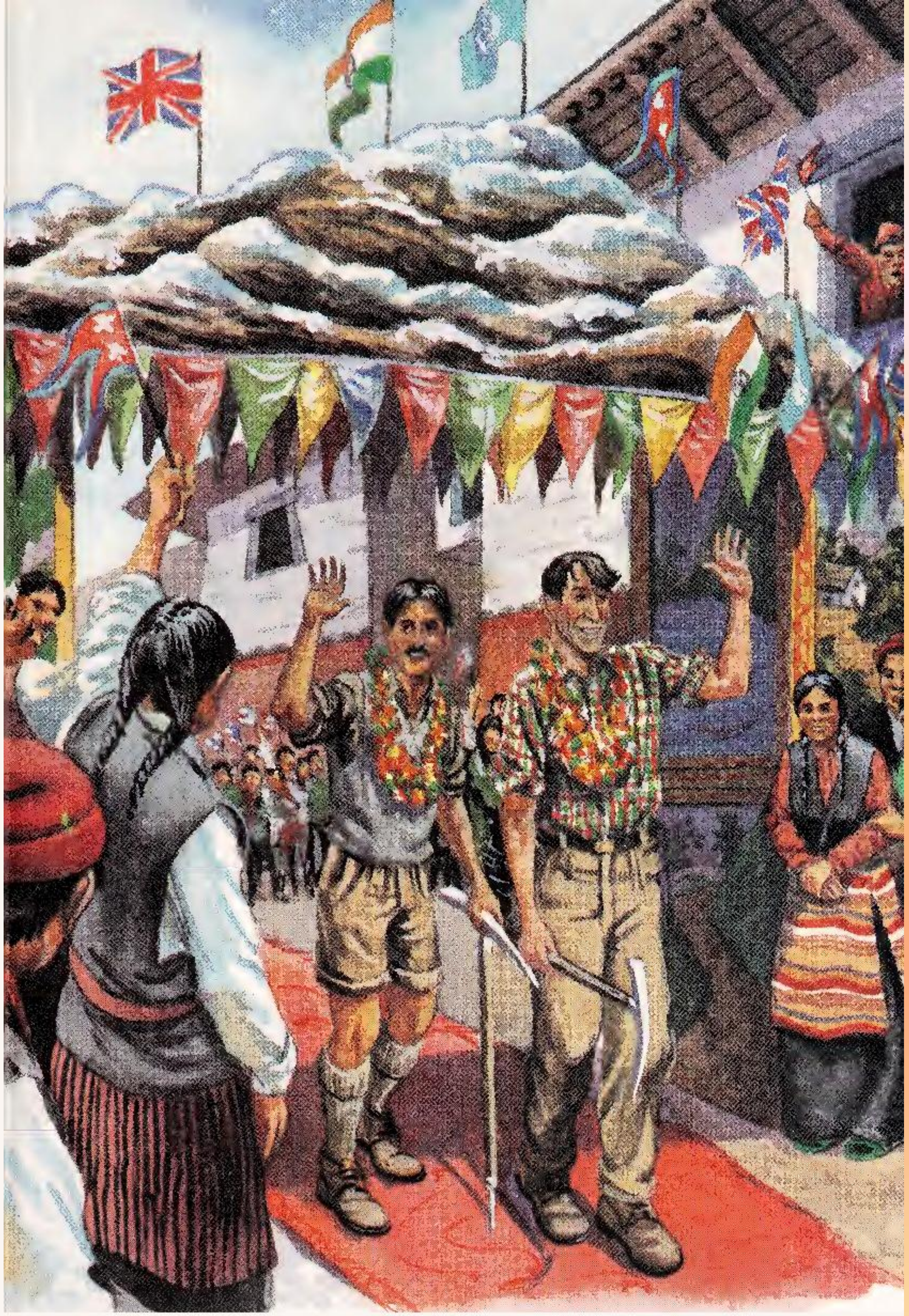

भारत ने इन दोनों के सम्मान में डाक-टिकट जारी किया जिसमें दोनों का चित्र अंकित था। कुछ लोग तो मांग कर रहे हैं कि एवेरेस्ट पर्वत का नाम बदल कर तेनज़िंग पर्वत किया जाये।

उसके बाद रानी एलिज़ाबेथ ने हिलैरी को विशेष रूप से सम्मानित किया। उन्हें नाइट (knight) की उपाधि दी गई, और अब उन्हें "सर एडमंड हिलैरी" कह कर सम्बोधित किया जायेगा। रानी ने तेनज़िंग को एक महत्वपूर्ण पुरस्कार "जॉर्ज मैडल" सम्मानित किया। ब्रिटेन में इन दोनों एवरेस्ट विजेताओं के नाम पर सड़कों का नामकरण किया गया है।

लेकिन कुछ लोग इस अभियान के बारे में विवाद पैदा करते हैं। कौन अधिक अच्छा पर्वतारोही है? दोनों में कौन शिखर पर पहले पहुंचा? कुछ का मानना है कि हिलैरी को तेनज़िंग के मुकाबले अधिक श्रेय दिया जाता है, क्योंकि वह एक गोरा है, और तेनज़िंग नहीं।

यह विवाद हिलैरी और तेनज़िंग की समझ से परे है। दोनों समझते हैं कि एक दूसरे के बिना वे यह कामयाबी हासिल नहीं कर सकते थे। और दोनों मिल कर भी यह कमाल नहीं कर पाते, अगर अभियान से जुड़े अन्य लोग उनके पीछे न होते।

तेनज़िंग पर्वतारोहियों को प्रशिक्षण देने वाले एक स्कूल के प्रमुख बन गए। हिलैरी अंटार्कटिका का अन्वेषण करने लगे, और उन्होंने अन्य कई पर्वतों की भी चढ़ाई की। उन्होंने यति की खोज करने के लिए भी एक अभियान संयोजित किया।

हिलैरी ने शेरपाओं की सहायता के लिए भी बहुत समय दिया। अधिकतर शेरपा बहुत गरीब होते हैं। उसने उनके लिए स्कूल, अस्पताल, हवाई-पट्टी, और पुल आदि के निर्माण के लिए धन जुटाने का कार्य किया। उनकी और तेनज़िंग की दोस्ती हमेशा कायम रही।

दोनों में से कोई भी दोबारा एवरेस्ट पर नहीं गया। उन्हें लगता है कि दोबारा वहां जाने में उस रोमांच का अनुभव नहीं हो सकता जो पहली बार में हुआ।

लेकिन आने वाले वर्षों में अन्य बहुत से पर्वतारोही एवरेस्ट के शिखर तक पहुंचे। कुछ ने वही रास्ता चुना जो हिलैरी और तेनज़िंग ने लिया था। लेकिन कुछ ने नए रास्ते चुन कर नयी चुनौतियों को जन्म दिया। हलके वज़न के आधुनिक उपकरणों की वजह से उन्हें सफलता भी मिली।

कुछ अन्य लोग शिखर तक पहुँचने का सबसे आसान रास्ता खोजना चाहते हैं। वे इस काम में कंप्यूटर की मदद लेते हैं, या आधे रास्ते तक वे हेलीकॉप्टर से जाते हैं। उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है चोटी पर अपने पाँव रख पाना।

कुछ ऐसे साहसी लोग भी हैं, जो बिना अतिरिक्त ऑक्सीजन के ऊपर तक चढ़ना चाहते हैं। रैनहोल्ड मेसनर नाम के एक व्यक्ति ने वाकई एक अविश्वसनीय कारनामा कर दिखाया। १९८० में वह बिलकुल अकेला, बिना ऑक्सीजन टैंक के, एवरेस्ट के शिखर तक पहुँचने में कामयाब रहा।

पृथ्वी का सबसे ऊंचा पर्वत अभी भी बहुत खतरनाक स्थान है। इसके शिखर तक पहुँचने के प्रयास में १०० से अधिक लोगों ने अपनी जान गंवाई है। जब तक इंसान स्वयं के लिए किसी चुनौती की खोज में रहेगा, वह एवरेस्ट पर जाने की ठानता रहेगा। कुछ तो शिखर तक पहुँच पाएंगे, कुछ नहीं।

भले कितने ही लोग क्यों न एवरेस्ट चढ़ जाएँ, सबसे पहले सफल होने वालों को हम हमेशा याद रखेंगे। ऐसा माना जाता था कि कभी कोई एवरेस्ट नहीं चढ़ पायेगा, जब तक हिलैरी और तेनज़िंग ने सफलता प्राप्त नहीं कर ली।
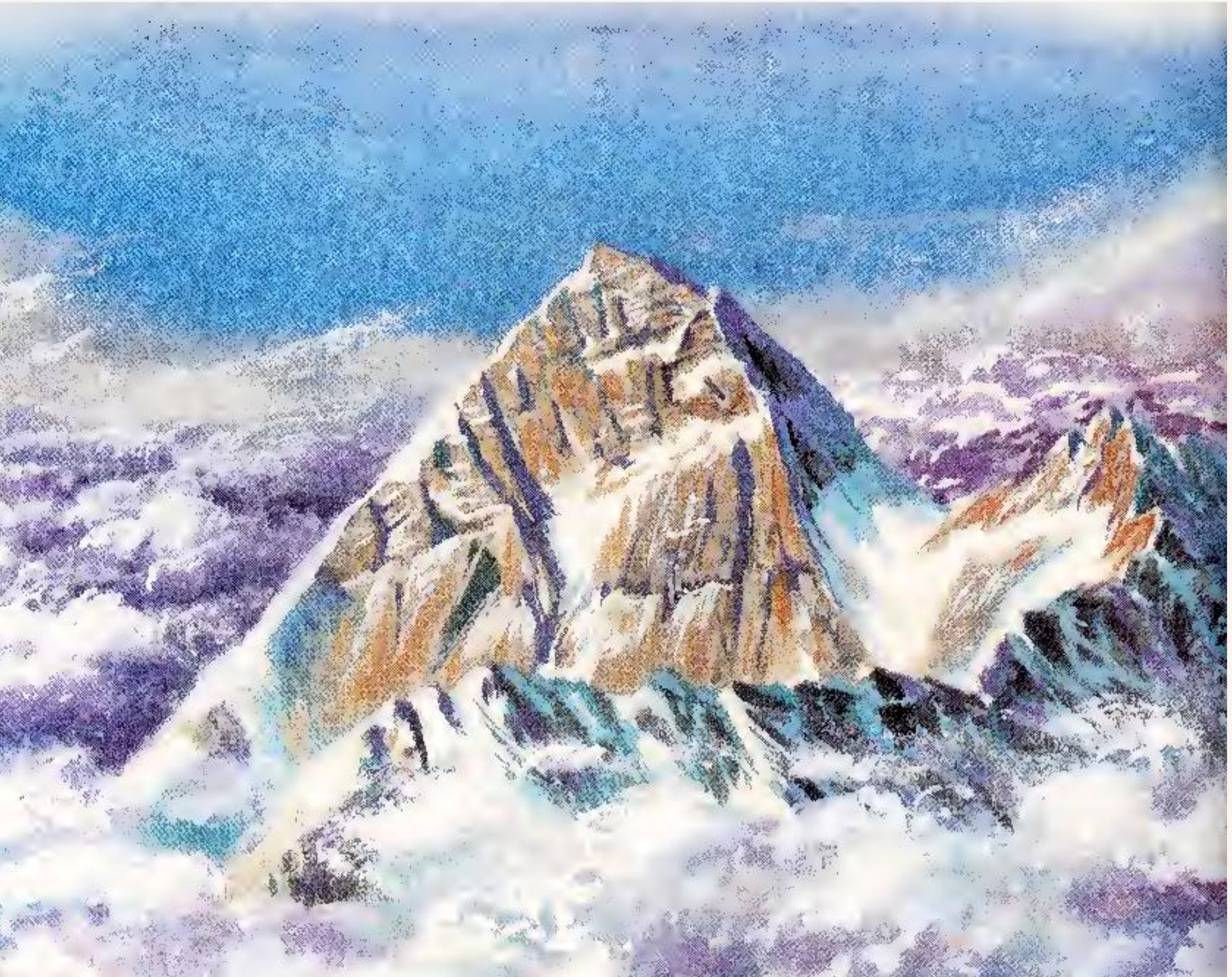
(समाप्त)